RNI No.: RAJBIL/2013/54153

ISSN : 2322-0074

अलख दृष्टि

ALAKH DRISHTI

(भाषा, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी की संवाहिका त्रैमासिक शोध पत्रिका)

वर्ष-2 • अंक-8 • त्रैमासिक • अक्टूबर-दिसम्बर, 2014

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	अनुवाद : आवश्यकता एवं उपयोगिता	प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र	6-14
2.	वर्ण-व्यवस्था का वैज्ञानिक-स्वरूप	प्रो. सत्यप्रकाश दूबे	15-20
3.	भारतीय परम्परा और संस्कृति में शिक्षक की भूमिका	डॉ. सरोज राय	21-24
4.	गुरुकुल शिक्षण व्यवस्था : अधुनातन संदर्भ	प्रो. लोकमान्य मिश्र, डॉ. कुलदीप शर्मा	25-28
5.	''अनुबंध चतुष्टय'' (वेदान्तसार)	डॉ. माया दूबे	29-31
6.	आचार्य तुलसी का शिक्षा दर्शन	डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, विकास शर्मा	32-34
7.	नैतिक मूल्यों की समस्या का समाधान : रामचरितमानस	डॉ. कुसुम सिंह, डॉ. तुषारकांत शास्त्री	35-37
8.	वैदिक परम्परा में मृत्यु - (समाधिमरण)	प्रो. हरि शंकर पाण्डेय	38-43
9.	भर्तृहरि काव्य में योगदर्शन	डॉ. प्रभा शर्मा	44-46
10.	Jainism and Social Concern	DR. Pradyumna Shah Singh	47-51
11.	Higher Education and the Role of Teachers	Dr Sanjay Goyal	52-57
	पुस्तक समीक्षा	शिवनाथ मिश्रा	58

Scanned by CamScanner

आचार्य तुलसी का शिक्षा दर्शन

डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, विकास शर्मा

सफल मानव जीवन के दो मूल आधार हैं- शिक्षा और उच्च आचरण। शिक्षा रूपी नेत्र से व्यक्ति मूर्त्त-अमूर्त्त, निकट-सुदूर और भविष्य का साक्षात्कार भी कर सकता है। तदनुरूप विशुद्ध आचरण हमें अप्राप्य प्रतीत होने वाले लक्ष्य पर भी सहज भाव से पहुंचा देता है।

नीतिकारों ने छह सुखों में अंतिम सुख अर्थकरी विद्या को स्वीकार किया है। वर्तमान में अर्थकरी विद्या का प्रभाव बढ़ने से सर्वांगीण व्यक्तित्व-निर्माण की बात गौण होती जा रही है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य क्या होना चाहिए, इस प्रसंग में शतपथ ब्राह्मण में एक कथा प्राप्त होती है। विदेह देश में माधव राजा तथा राहूगण उसके मंत्री थे। एक बार राजा ने अपने मुख में अग्नि को बंद कर रखा था। वहां अग्नि शब्द का अर्थ अनंत प्रकाश करने वाली विद्या होने से था।

शिक्षा एक ऐसा विषय है, जिस पर आदिकाल से चिन्तन होता रहा है। व्यक्ति के लिये शिक्षा क्यों जरूरी है, उसके उद्देश्य क्या हैं, उसे कैसे प्रभावी ढंग से दिया जा सकता है, किस व्यक्ति को हम शिक्षित कह सकते हैं और समाज के लिये शिक्षित व्यक्ति की क्या उपयोगिता है? आदि प्रश्न मनीषियों के मस्तिष्क को सदा से कुरेदते रहे हैं। अगणित विद्वानों ने इन प्रश्नों पर अपना सिर खपाया है। उनके अहर्निश चिन्तन-मनन से जो कुछ सामने आया, वह केवल सैद्धान्तिक ही नहीं, अनुभव-प्रमाणित भी है।

दरअसल शिक्षा कोई ऐसी प्रक्रिया नहीं है, जिसे समाज और संस्कृति से अलग करके देखा जा सके। यह इन दोनों से अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई है इसलिए इस पर समाज और संस्कृति को केन्द्र में रखकर ही विचार किया जा सकता है।

भारतीय शिक्षा का इतिहास जिन मनस्वी महापुरुषों के शैक्षिक योगदान को अत्यन्त आदर के साथ रेखांकित करता है, उनमें आचार्य तुलसी का नाम निश्चय ही उल्लेखनीय है। वे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सम्प्रदाय के आचार्य थे। वे स्वयं शास्त्रों के गंभीर अध्येता और उनसे अर्जित ज्ञान को अपने शिष्यों तक पहुंचाने वाले कुशल आचार्य भी थे। अपने पंथ में सम्मिलित होने वाले नवागन्तुक शिष्यों को सुशिक्षित और शास्त्रीय ज्ञान से पारंगत करने के लिये वे

Scanned by CamScanner

लगातार प्रयत्नरत तो रहते ही थे, अपनी शिक्षण-प्रक्रिया को ऐसा रूप देने में भी लगे रहते थे, जिससे वह अधिकाधिक प्रभावी और शिष्योपयोगी बनती रहे। अपनी मौलिक सूझ-बूझ और व्यावहारिक चतुराई से वे अपनी पाठ्य सामग्री को अत्यन्त सरल व बोधगम्य भी बना देते थे। उनकी शिक्षा का उद्देश्य शिष्यों को ज्ञान सम्पन्न ही नहीं, संस्कारित करना भी होता था क्योंकि संस्कार ही आगे चलकर ऐसे नियामक की भूमिका अदा करते हैं, जो व्यक्ति को कभी सही रास्ते पर चलने से विचलित नहीं होने देते, उसे गलत काम करने से रोकते हैं।

आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त शिक्षा जीविका ही नहीं, जीवन की शिक्षा होती थी। जीवन में ज्ञान और श्रम दोनों की ही जरूरत होती है। अकर्मण्य व्यक्ति जीवन में कभी सफल नहीं होता। आचार्यश्री तुलसी का अभिमत था कि श्रम से विमुख होना विकास से विमुख होना है। अकेले ज्ञान की शिक्षा एकांगी होती है। श्रम का साथ होने पर ही उसमें पूर्णता और सार्थकता आती है। जो ज्ञान बिना श्रम के प्राप्त होता है, उससे आनन्दानुभूति नहीं होती। शिक्षा से तन, मन और मस्तिष्क-तीनों का विकास होना चाहिए। इसी को व्यक्तित्व का सर्वांगीण या बहुमुखी विकास कहा जाता है। जो शिक्षा इन तीनों का संतुलित विकास नहीं करती, वह मनुष्योपयोगी नहीं हो सकती।

पुराने सभी शिक्षा शास्त्रियों की तरह आचार्य तुलसी भी मानते थे कि शिक्षा का प्रारंभ रटने अर्थात् कण्ठस्थ करने से होना चाहिए। पहले नीति के श्लोकों, लघुसिद्धान्तकौमुदी के सूत्रों, कवियों के शिक्षाप्रद या भक्ति सम्बन्धी दोहों, चौपाइयों की रटाई करवाई जाती थी, उनका अर्थ जानना या उपयोगिता बताना जरूरी नहीं समझा जाता था। बाद में अर्थ जानने की प्रक्रिया शुरू होती थी। यह इसलिए होता था क्योंकि पुस्तकीय ज्ञान धोखा दे सकता है लेकिन कण्ठस्थ ज्ञान आजीवन साथ रहता है। आचार्य तुलसी का मानना था कि स्मरण शक्ति को विकसित व तीव्र बनाने के लिये पहले विद्यार्थियों में रटने की आदत डालनी चाहिए। यह रटना एक प्रकार से पाठ्य सामग्री को स्मृति बैंक में डाल देने की तरह होता है। जीवन में जब कभी जरूरत होती है, विद्यार्थी इसमें से काम की चीज निकालकर अपने उपयोग में ले सकता है।

अन्य शिक्षा शास्त्रियों की तरह आचार्य तुलसी भी शिक्षा की शुरूआत मातृभाषा से करने के पक्ष में थे क्योंकि यह वह भाषा होती है, जो बच्चे के घर परिवार, पास-पड़ौस और उसके स्थानीय परिवेश की बोली से मिलती-जुलती है। इसे सीखना आसान होता है क्योंकि इसमें बहुत कुछ अपना जाना-पहचाना सा लगता है। इस संदर्भ में यह जान लेना भी जरूरी है कि भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम ही नहीं होती, वह संस्कृति की संवाहक भी होती है। अंग्रेजी भाषा को पढ़ते हुए विद्यार्थी पश्चिमी संस्कृति से स्वयं को पूरी तरह अछूता रख पाएं, ऐसा दिखाई नहीं देता।

आचार्य तुलसी यह मानते थे कि विद्यार्थी को सिखाया नहीं जाता, वह स्वयं सीखता है। गुरु तो केवल शिष्य को सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाता है, उसे अपने पथ से विचलित नहीं होने देता। इसके लिए वह सुविचारित योजना बनाता है, उसे सदा सक्रिय रखता है, उसकी छिपी व सोई क्षमता को जगाता व प्रोत्साहित करता है। यह सब तभी संभव होता है, जब दोनों के बीच के सम्बन्ध मधुर होते हैं। ध्यान रहे शिष्य में गुरु के प्रति आदर होना बहुत जरूरी है लेकिन यह आदर स्वतः प्रेरित हो, यह भी जरूरी है। इसी तरह गुरु में भी शिष्य के प्रति वात्सल्य एवं सहानुभूति का भाव होना आवश्यक है। जब दोनों के बीच इस तरह का सौहार्दपूर्णवातावरण बनता है, तभी शिक्षण प्रक्रिया आसान व प्रभावी बनती है।

परीक्षोन्मुखी शिक्षा को आचार्यश्री हानिकारक मानते थे। इससे विद्यार्थी की सारी क्षमताओं का सही-सही आकलन नहीं हो सकता। असल में विद्यार्थी कोई निर्जीव वस्तु नहीं होता, वह एक जीता-जागता प्राणी होता है। उसका स्वभाव, सामर्थ्य और व्यक्तित्व उसका अपना होता है। इसीलिए हर शिष्य अपनी एक अलग पहचान और अलग विशेषता रखता है। उन सबको एक ही कसौटी से जांचा-परखा नहीं जा सकता। निरन्तर सम्पर्क में रहने के कारण गुरु ही यह बता सकता है कि कौन छात्र कैसा है, उसकी क्षमता कितनी है, वह किस विषय में कितना योग्य है और उसमें क्या-क्या विशेषताएं हैं अतः गुरु से बढ़कर शिष्य का अन्य कोई परीक्षक ऐसा नहीं हो सकता, जो उसकी सही-सही जांच कर सके।

शिक्षण में आचार्य तुलसी प्रश्नोत्तर विधि को सर्वाधिक महत्त्व देते थे लेकिन वे इसे यांत्रिक बना देने के पक्ष में नहीं थे। इस विधि से शिक्षक शिष्य की उपलब्धि को जांचता चलता है और शिष्य अपनी शंकाओं का समाधान करता रहता है। शिष्य का प्रश्न जिज्ञासा के लिए होना चाहिए, जिससे वह पठित संदर्भ में से कुछ जानकर अपने संशयों का निवारण कर सके। इसी तरह गुरु के प्रश्न भी शिष्य के ज्ञान की परख या समझ को जानने के लिए होने चाहिए।

Scanned by CamScanner

उस शिक्षण को सार्थक या प्रभावी नहीं कहा जा सकता, जो विद्यार्थी को इतना संतुष्ट कर दे कि उसमें कुछ और जानने की इच्छा ही नहीं रहे। वास्तव में शिक्षण को अनन्त जिज्ञासा का द्वार खोलने वाला होना चाहिये। क्योंकि वही व्यक्ति को आजन्म जिज्ञासु बनाए रख सकता है। जिज्ञासा में जितनी अधिक वृद्धि होगी, उतना ही ज्ञान का विस्तार होगा। इस प्रकार शिक्षा एक जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। यह औपचारिक शिक्षा की तरह एक खास समयावधि के बाद समाप्त नहीं हो जाती।

आचार्य तुलसी शिक्षक का महत्त्व व्यक्त करते हुए कहते थे कि उन पर भावी पीढ़ी को निर्मित करने का दायित्व होता है इसलिए उन्हें साधारण मनुष्य के रूप में नहीं देखना चाहिए। एक अच्छे शिक्षक का निर्माण एक कठिन प्रक्रिया से, कठोर अभ्यास से गुजर कर होता है। जितना उन्नत शिक्षक का स्तर होता है, उसके शिष्य उतने ही अच्छे नागरिक बनते हैं।

आचार्य तुलसी के अनुसार शिक्षक का प्रयास यह होना चाहिए कि उसकी इच्छा के अनुरूप यदि कोई शिष्य प्रगति नहीं कर रहा है तो भी वह उसे हतोत्साहित न करे। संसार में कुछ भी असंभव नहीं होता, नेपोलियन का यह कथन शिक्षक के लिये एक आदर्श वाक्य हो सकता है। उसे यह जानना चाहिए कि अभ्यास करते-करते तो जड़मति भी सुजान हो जाते हैं। इसलिये उसे कभी भी आशा का सहारा नहीं छोड़ देना चाहिए।

जिस शिक्षा का उद्देश्य एक मात्र भौतिक विकास ही रह जाता है, वहां जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष अध्यात्म सर्वथा गौण हो जाता है। ऐसी शिक्षा से शिक्षित देश की युवा पीढ़ी न चारित्रिक मूल्यों को उन्नत कर पाती है, न राष्ट्रीय भावना को बढ़ा पाती है, न सामाजिकता का विकास कर सकती है और न पारिवारिक रिश्तों को मधुर बना सकती है। इस एक पीढ़ी की अपूर्णता एक साथ तीन-तीन पीढ़ियों के लिए त्रासदी बन जाती है।

एक व्यक्ति अध्ययनशील तो नहीं पर साधनाशील है, उससे मैं प्रसन्न हूं। एक अध्ययनशील भी है और साधनाशील भी, मैं उससे बहुत प्रसन्न हूं। एक अध्ययनशील तो है पर साधनाशील नहीं, वह व्यक्ति मुझे प्रिय नहीं। एक अध्ययनशील भी नहीं और साधनाशील भी नहीं, वह तो किसी काम का ही नहीं।

शिक्षा जीवन का एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है। पर अपने आप में वह साध्य नहीं है। साध्य है जीवन की पवित्रता। इस दृष्टि से शिक्षा का स्वतंत्र मूल्य नहीं है। वह जीवन-मूल्यों के साथ जुड़कर ही मूल्यवान् बनती है। इस दुनिया में ऐसे बहुत व्यक्ति हैं, जो पढ़े-लिखे तो हैं, पर उनका जीवन असंस्कारित है। वे एक अनपढ़ व्यक्ति की तरह राग-द्वेष से लिप्त रहते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षा उनके लिए भारभूत बन जाती है। समाज और राष्ट्र के लिए भी वह कल्याणी नहीं बनती। एक अनपढ़ व्यक्ति गलत काम करता है, वह वांछनीय नहीं है तो अक्षम्य भी नहीं है। पर एक शिक्षित व समझदार व्यक्ति गलत काम करता है, वह क्षम्य नहीं होता। दूसरी बात एक शिक्षित व्यक्ति गलत काम को जितनी होशियारी से करता है, शायद अशिक्षित व्यक्ति नहीं कर सकता। यदि वह श्रेष्ठ काम नहीं करके गलत कार्यों में अपनी दक्षता का उपयोग करताहै तो शिक्षा बदनाम होती है। शिक्षा का अभिप्रेत है- एक अच्छे आदमी का निर्माण। यदि शिक्षा अच्छे आदमी का निर्माण नहीं कर सकती तो उसकी सार्थकता पर प्रश्नचिन्ह लगना स्वाभाविक है।

संदर्भ सूची -

1. शिक्षा को बनाएं - आचार्य तुलसी, जैन विश्वभारती, लाडनूं
2. एक बूँद एक सागर, डॉ. कुसुम प्रज्ञा, जैन विश्वभारती, लाडनूं
3. जीवन विज्ञान शिक्षा का अभिनव आयाम, आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूं
4. अणुव्रत गति-प्रगति-आचार्य तुलसी, आदर्श साहित्य संघ चुरू
5. आचार्य तुलसी साहित्य : एक सर्वेक्षण, डॉ. समणी कुसुम प्रज्ञा, जैन विश्वभारती लाडनूं

- असिस्टेन्ट प्रोफेसर
अहिंसा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

- शोध छात्र
अहिंसा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

♦ ♦ ♦

Scanned by CamScanner